।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इमा अग्ने मतयस्तुभ्यं जात गोभिरस्थवैरभि गृणन्ति राधः।
यदा ते मर्तो अनु भोगमानडवसो दधो मतिभिः सुजात।।
वेद विज्ञान से हमारी बुद्धि ठीक रूप में विकसित होती है और हमें प्रभुदर्शन के योग्य बनाती है, यह हमारा ठीक रूप में धारण करती हैण

वर्ष 36, अंक 23 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 अप्रैल, 2013 से 28 अप्रैल, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 दयानन्दाब्द : 189
सृष्टि सम्वत् 1960853114 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 4 तक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में

140 वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नव सम्वत्सर 2070 के शुभ अवसर पर

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह उत्साह व संकल्प के साथ सम्पन्न

पाकिस्तान से पधारे हुए हिन्दू परिवारों का किया गया स्वागत

सहायता के लिए कोई कसर शेष नहीं रखेगें – *महाशय धर्मपाल*

दिल्ली मे एक वर्ष में 10000 नए परिवारों से सम्पर्क अभियान चलाएँगें – आर्य समाज के सभी संगठन

दीप प्रज्वलित करते स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, सत्यानन्द आर्य जी, सभा उपप्रधान सुरेन्द्र रैली जी एवं राजसिंह आर्य जी

मंचपर उपस्थित आर्य महानुभाव

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य तत्वावधान में नव सम्वत्सर 2070 के शुभ अवसर पर 140 वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह दिल्ली के बाराखम्बा रोड स्थित फिक्की सभागार में 11 अप्रैल 2013 को उत्साह एवं संकल्प के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य ऋषिदेव जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। यज्ञ का संयोजन श्री मदन मोहन सलुजा जी ने किया।

सार्वजनिक सभा का प्रारम्भ प्रातः 10.15 बजे श्री सत्यानन्द जी आर्य प्रसिद्ध समाजसेवी ने दीप प्रज्वलन कर किया।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय भाषण देते आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने कहा आर्य समाज की स्थापना जिन उद्देश्य के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की उसको पूर्ण

शेष पृष्ठ 2 पर ....

पं.गुरुदत्त विद्यार्थी : एक युगधर्मी वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और दार्शनिक

जन्मदिवस पर विशेष

प्रो.भवानीलाल भारतीय

जो व्यक्ति विधाता के यहाँ से मात्र छब्बीस वर्ष की अल्पायु लेकर आया हो और इस अत्यन्त संक्षिप्त जीवनावधि में लेखन, शोध व अध्ययन के साथ–साथ शिक्षा तथा समाजसेवा के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय कार्य करे, उसकी प्रतिभा, हिम्मत तथा कार्यक्षमता की प्रशंसा तो होनी ही चाहिए। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एक ऐसे ही मनस्वी पुरुष थे, जिन्होंने अंग्रेजी में उत्कृष्ट साहित्य लिखकर महर्षि दयानन्द के वैदिक दृष्टिकोण की न केवल पुष्टि की अपितु पाश्चात्य–विद्वानों पर उसकी छाप छोड़ी। पं. गुरुदत्त का जन्म 26 अप्रैल1864 को मुल्तान के एक सद्गृहस्थ लाला राधाकृष्ण के यहाँ हुआ। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे उच्च शिक्षा के लिए लाहौर आए और गवर्नमेन्ट कॉलेज से उन्होंने रसायन शास्त्र विषय लेकर एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दिनों विज्ञान के स्नातकों को भी एम.ए की उपाधि दी जाती थी। आर्य समाज के सभासद वे मुल्तान में ही बन गए थे।

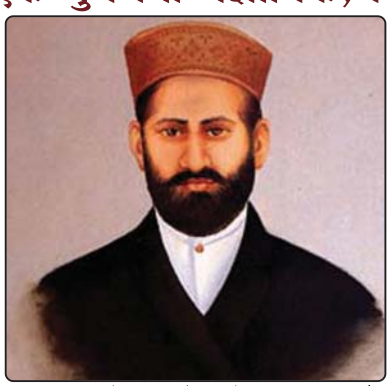

1883 के अक्टूबर मास में महर्षि दयानन्द के अत्यन्त रुग्ण होकर अजमेर आने का समाचार लाहौर की आर्य समाज को मिला तो यहाँ के आर्यो ने स्वामीजी की सेवा शुश्रूषा के लिए अपने दो सभासदों को अजमेर भेजा। इनमें प्रथम थे लाला जीवनदास और उनके साथ गए थे पं. गुरुदत्त, जिनकी आयु उस समय मात्र उन्नीस साल की थी।

पं. गुरुदत्त ने परम आस्तिक महर्षि दयानन्द के महाप्रस्थान को प्रत्यक्ष देखा। उन्होंने अनुभव किया कि सच्चा ईश्वर–विश्वासी और लोकहित के लिए समर्पित महापुरुष कितना निःस्पृह होकर भौतिक शरीर का परित्याग कर देता है। लाहौर की आर्य समाज ने महर्षि की स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो–वैदिक कॉलेज की स्थापना का निश्चय किया और इसे क्रियान्वित करने के लिए धन संग्रह का अभियान चलाया। पं. गुरुदत्त इस कार्य के लिए अग्रणी रहे और देश के विभिन्न भागों में जाकर प्रचुर धनराशि एकत्र की। वे जहाँ–जहाँ जाते आर्य समाज के मंच से प्रवचन करते और वेद का सन्देश देते। उन दिनों उच्च शिक्षित, सुपठित व्यक्ति के लिए उच्च सरकारी सेवा में प्रवेश पाना कठिन नहीं था, किन्तु गुरुदत्त ने अपने जीवन

शेष पृष्ठ 2 पर ....

डा.रामप्रकाश जी द्वारा सम्पादित पं.गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवनी की पुस्तक सभा कार्यालय में उपलब्ध
हिन्दी तथा अग्रेजी भाषा में उपलब्ध मात्र 80 रुपये में
आर्य समाज के प्रत्येक अधिकारियों एवं कार्यकताओं को अवश्य ही पढ़नी चाहिए

प्रथम पृष्ठ का शेष

पं.गुरुदत्त विद्यार्थी : एक.....

को धर्म और समाज की सेवा में अर्पित कर दिया था। 1887 में जब गवर्नमेन्ट कॉलेज लाहौर के विज्ञान के प्रोफेसर जे.सी. ओमन लम्बे अवकाश पर गए तो पं. गुरुदत्त को कुछ काल के लिए उनके स्थानापन्न होकर अध्यापन का कार्य मिला। 1889 में वे नवस्थापित डी.ए.वी. कॉलेज में अवैतनिक रूप से गणित एवं विज्ञान पढ़ाने लगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने कोई नौकरी नहीं की।

पं. गुरुदत्त ने स्वाध्याय के बल पर संस्कृत व्याकरण पढ़ा और अष्टाध्यायी पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया। आयु में उनसे बड़े स्वामी स्वात्मानन्द, स्वामी महानन्द तथा स्वामी अच्युतानन्द शिष्य बन कर उनसे व्याकरण का अध्ययन करने लगे थे। वे जितने मेधावी, प्रबुद्ध तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे, स्वास्थ्य तथा शरीर के प्रति उतने ही लापवाह भी थे। नतीजतन शरीर की ओर ध्यान न देने, स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करने तथा अस्त–व्यस्त दिनचर्या ने इस युवा मुनि को अकाल–कवलित कर लिया। उन्हें भयंकर क्षय रोग ने धर दबाया। स्वास्थ्य सुधार के लिए मरी (पाकिस्तान) जैसे रम्य पर्वतीय स्थल पर जाने से भी उनके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। अन्तत: 19 मार्च, 1890 को पं. गुरुदत्त ने परलोक के लिए प्रस्थान किया। विज्ञान के विद्वान होने पर भी पं. गुरुदत्त की वेदाध्ययन में गहरी रुचि थी। उन्होंने रिजेनेरेटर ऑफ आर्यावर्त' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया। इसमें उनके शोध पत्र छपने लगे जो वेद और वेदार्थ, आर्य सभ्यता और दर्शन तथा ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों एवं दर्शन से सम्बन्धित होते थे। कालान्तर में ये शोध निबन्ध पुस्तकाकार छपे और वेद–विषयक शोधार्थियों में चर्चा और आलोचना (समीक्षा) के विषय बने। इन शोधा पत्रों में ' दि टर्मिनोलोजी आफ दि वेदाज' (1888) विशेष चर्चित हुआ। इसका दूसरा भाग 'दि टर्मिनोलोजी आफ दि वेदाज़ एण्ड यूरोपियन स्कालर्स' 1889 में प्रकाशित हुआ। वेदार्थ विषयक यह एक गम्भीर शोधा पत्र था जिसमें प्रो. मोनियर विलियम्स तथा अन्य पाश्चात्यों द्वारा किये गए वेदार्थ की त्रुटियों की विवेचना की गई थी। 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में डिग्री कक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया। किसी भारतीय विद्वान की कृति को यहाँ के पाठ्यक्रम में स्थान मिलने का यह प्रथम अवसर था। पं. गुरुदत्त ने कुछ गम्भीर दार्शनिक विषयों पर विवेचनात्मक निबन्ध लिखे थे। इनमें उल्लेखनीय हैं एविडेन्स ऑफ ह्यूमन स्पिरिट (2 भाग) जीवात्मा के अस्तित्व के प्रमाण, रियेलिटीज ऑफ इनर लाइफ (आन्तरिक जीवन की वास्तविकता), धन की डाह (pecuni comania)। उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की वैदिक पीठ के प्रोफेसर मोनियर विलियम्स के प्रसिद्ध ग्रन्थ इण्डियन विज़्डम की आलोचना लिखी जो उनकी मृत्यु के बाद 1893 में छपी। पादरी टी. विलियम्स ने जब नियोग प्रथा पर आक्षेप किए तो पण्डित जी ने उसका सतर्क उत्तर दिया। 'ए रिप्लाइ टु, मि. विलियम्स क्रिटिसिज़्म ऑन नियोग' शीर्षक से यह शोधपत्र 1890 में छपा। पं. गुरुदत्त का वेद और वैदिक साहित्य विषयक लेखन कार्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। **ईशावास्योपनिषद्** का अंग्रेजी अनुवाद 1888 में छपा। मुण्डक तथा माण्डूक्योपनिषद् पर उनकी विद्वत्तापूर्ण व्याख्याएँ प्रथम वैदिक मैगजीन में 1889 में छपी, पश्चात् इन्हें पुस्तकाकार छापा गया। ओंकार की विवेचना में प्रणीत माण्डूक्योपनिषद् जैसे अल्पकाय किन्तु गूढ़ार्थ वाले उपनिषद् की सरस एवं भावपूर्ण व्याख्या कर पं'. गुरुदत्त ने इसे सुबोध बना दिया है अन्यथा यह उपनिषद् सामान्य पाठकों के लिए दुर्बोध है। विज्ञान के विद्वान होने के कारण पं. गुरुदत्त ने वेद मन्त्रों के वैज्ञानिक अर्थ करने में रुचि दिखाई। यदि वे कुछ अधिक काल तक जीवित रहते तो वेदों के वैज्ञानिक अर्थ करने की दयानन्द प्रतिपादित परिपाटी को बल मिलता। तथापि उन्होंने वैदिक टैक्स्ट्रस शीर्षक तीन लघु निबन्धों में ऋग्वेद (1/219) 1/27 तथा 1/50/1/3 के मन्त्रों के भौतिक विज्ञानपरक अर्थ किए। ये लघु पुस्तिकाएँ 'दि एट्मोस्फियर', 'दि कम्पोजीशन आफ वाटर' तथा 'गृहस्थ' शीर्षक से छपीं। इन पुस्तिकाओं की उपयोगिता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने इनके हिन्दी अनुवादों को 1894 में प्रकाशित किया।

पं. गुरुदत्त ने कुछ ऐसे निबन्ध लिखे जो शोध तथा विवेचना की दृष्टि से उच्चस्तरीय ठहराए गए। इनमें से प्रमुख थे 1. ब्रह्मसमाज के सन्दर्भ में आत्मा की साक्षी (Conscience)और वेद 2. पंजाब के एक ब्राह्मण द्वारा धार्मिक विषयों पर लिखे गए निबन्धों की समीक्षा 3. स्वामीजी के वेद भाष्य की आलोचना का उत्तर 4. मानवी चिन्तन और भाषा की उत्पत्ति 5. मानव की अधोगामी उन्नति 6. माँसाहार का औचित्य या अनौचित्य 7. टी. विलियम्स द्वारा 'वायुमण्डल' शीर्षक वैदिक निबन्ध की आलोचना 8. टी. विलियम्स के 'वेदों में मूर्तिपूजा' शीर्षक लेख का प्रतिवाद 9. मि. फ्रैडरिक पिंकाट के वेद विषयक लेख का उत्तर।

पं. गुरुदत्त के लेखन की गुरुता तथा उनके पाण्डित्य की महत्ता का अनुभव कर उनके निधन के पश्चात् उनके सम्पूर्ण साहित्य को ग्रन्थाकार प्रकाशित करने के गम्भीर प्रयत्न किए गए। उनके वरिष्ठ साथी लाला जीवनदास के उनके समग्र लेखन को जीवनी के साथ 1897 में प्रकाशित किया। इसके दो संस्करण 1902 तथा 1912 म` छपे। पं. सन्तराम तथा पं. भगवद्दत्त ने सम्मिलित रूप से गुरुदत्त की सम्पूर्ण लेखावली का हिन्दी अनुवाद किया जो महाशय राजपाल द्वारा 1918 में छापा गया। पण्डित जी के सहपाठी तथा मित्र लाला लाजपतराय ने उनकी मृत्यु के तुरन्त बाद उनका जीवनचरित अंग्रेज़ी में लिखा जिसका हिन्दी अनुवाद इन पंक्तियों के लेखक ने 1990 में किया। डॉ. रामप्रकाश ने पं. गुरुदत्त का शोधपूर्ण जीवनचरित लिखा है जो 1969 में प्रथम बार छपा। कुछ समय पूर्व उन्होंने 'कम्पलीट वर्क्स ऑफ पं. गुरुदत्त' का एक संशोधित–सम्पादित संस्करण प्रकाशित किया है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी पंजाब के प्रथम विज्ञान स्नातक थे। उनकी स्मृति में पंजाब विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के एक कक्ष को पं. गुरुदत्त हॉल ऑफ कैमिस्ट्री का नाम प्रदान किया गया है।

प्रथम पृष्ठ का शेष **आर्य समाज स्थापना दिवस ...**

उद्बोधन देते स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

उद्बोधन देते डा. महेश विद्यालंकार जी

उद्बोधन देते आचार्य दार्शनेय लोकेश जी

हालैण्ड से पधारे आर्य समाज के अधिकारियों का किया गया सम्मान

करना ही सभी आर्यजनों का कर्तव्य हैं। उन्होंने हिन्दु परिवारों को भारत मे रहने के दौरान आर्य समाज की ओर से हर प्रकार की सहायता देने की आश्वासन दिया।

इस शुभ अवसर पर समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये आर्य विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने उद्बोधन में कहा एकहि साधे सब सधे सब साधे सब जाहि। अर्थात् एक परमात्मा का साध लेने पर सभी कार्य अपने आप सधा जाते हैं। आर्य जी ने आगे कहा कि हमें आर्य समाज के स्थापना के उद्देश्यों को समझने की आवश्यकता है। आर्य समाज ने समाज सुधार के लिए समाज में जो सुधारवादी कार्य किए, उन्हें भी समझने तथा समझाने की आवयकता है। आर्य समाज की बातों को अत्यन्त सहजता से प्रत्येक मनुष्य तक पहुचाने की योजना पर कार्य करना होगा।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने जितने कार्य किए उनका वर्णन सहज नहीं है। आर्य समाज को देश और समाज में फैली अनेकानेक बुराईयों,अन्धविश्वासों और पाखण्डों को समाप्त करने के लिए पूरी शक्ति से आगे आना चाहिए। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो समाज में घिरे अन्धकार को हटाकर प्रकाश फैला सकती है।

समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम पर महर्षि दयानन्द आर्य विद्या पब्लिक स्कुल शादीखामपुर, वैदिक शिक्षा केन्द्र प्रीत विहार, दिल्ली के अनेक विद्यालयों तथा गुरुकुलों द्वारा आर्य समाज सुधार, मानव जीवन के उत्थान एवं पतन के कारण समाज में प्रचलित अंधविश्वास एवं पाखण्ड को नाटिका का रूप में प्रस्तुति हुई और ये नाटिका का रूप में करना सामान्य बात नहीं हैं।

इस अवसर पर आर्य कार्यकर्ता श्री एस आर्य जी के दोनों बच्चें नन्ही नन्दनी और किशोर अभिनन्दन की लघु नाटिका इतनी प्रभावशाली थी कि उपस्थित सभी लोगों ने अतिशय प्रशंसा की और आशीर्वाद दिया।

ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित खेल–कुद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी को "श्री लालमन आर्य स्मृति पुरस्कार", श्री नीरज आर्य जी को " धीरज घई स्मृति पुरस्कार", 94 वर्षीय स्वतन्त्रता सेनानी माता श्रीमती प्रेमवती जी को सभा की ओर से विशेष सम्मान किया गया जो कि आर्यसमाज सफरजंग एन्कलेव के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता जी की पूज्य माता जी है। अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में जिन आर्य कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने कार्य किया था उनमें सर्वश्री , श्री सुखवीर सिंह जी, सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, शिवकुमार मदान जी, डॉ. ओमप्रकाश भटनागर जी, सुरेन्द्र चौहान जी तथा अन्य कर्मठ आर्यजनों को सम्मानित किया गया तथा विद्यालयों के सांस्कृतिक कार्यक्रम के संयोजिका को सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं माता प्रेमलता शास्त्री, श्री उदयन शर्मा, श्री राकेश ठुकराल मुख्य वक्ता के रूप श्री डॉ. महेश विद्यांलकार जी, आचार्य दर्शनेय लोकेश जी अतिरिक्त दिल्ली के समस्त आर्य समाज एवं शिक्षण संस्थाओं से सम्बन्धित आर्यजनों,महिलाओं, बच्चे और विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षका ओं ने हजारों की संख्या में उपस्थित थे।

विस्तृत झलकिया पृष्ठ 3 पर ...

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह की प्रमुख झाँलकिया

महाशय धर्माल जी का स्वागत करते ब्र.राजसिंह आर्य जी

मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित श्रीमती वीना आर्या एवं श्री धर्मपाल आर्य

श्रीमती प्रेमवती आर्या जी को सम्मानित करते महाशय धर्मपाल जी

अन्तराष्ट्रीय पुस्तक मेले में सहयोगी कार्यकर्ताओं को सम्मानित करते ब्र.राजसिंह आर्य

ऋषि बोधोत्सव में प्रतियोगिता सम्मेलन में विजेताओं को सम्मानित करते स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी

सत्यानन्द आर्य जी का स्वागत करते श्री विद्यमित्र ठुकराल जी

आचार्य दार्शनेय लोकेश जी को सम्मानित करते सभा उपप्रधान राजेन्द्र दुर्गा जी

स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी को स्वागत करते श्री विक्रम नरुला जी

मुख्य अतिथि श्री उदयन शर्मा जी का स्वागत करते कीर्ति शर्मा जी

ऋषि बोधोत्सव पर आयोजित खेल-कूद प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, सभा उपप्रधान सुरेन्द्र कुमार रैली जी एवं उषाकिरण आर्या जी

यज्ञ के शुभ अवसर पर वेदपाठ करते गुरुकुल किग्जवै कॅम्प के ब्रहचारी

पाकिस्तान से पधारे हिन्दुओं की देखरेख में लगे नाहरसिंह आर्य जी सम्मानित करते महाशय धर्मपाल

पाखण्ड एवं अंधविश्वास को नाटिका के रूप में प्रस्तुत करते कु. नन्दनी आर्या

विद्यालयों के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति

नीरज आर्य जी को सम्मानित करते महाशय धर्मपाल जी साथ श्रीमती सन्ध्या आर्या

साप्ताहिक आर्य सन्देश

22 अप्रैल, 2013 से 28 अप्रैल, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25 / 26 अप्रैल –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 अप्रैल, 2013

प्रतिष्ठा में,

श्री.......................

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

खेद है – शास्त्रार्थो के रोचक संस्मरण जो प्रकाशित किया जा रहा था। कुछ पाठकों,सदस्यों व विद्वानों ने इसके विश्वसनीयता के उपर सवाल उठायें हैं अंत: तत्काल प्रभाव से आगे प्रकाशित नहीं किया जा रहा है। अत: पाठकगण को हुई असुविधा के लिये खेद हैं ।

– सम्पादक

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/–रु. सैकड़ा	मात्र 300/–रु. सैकड़ा

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/–रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।
-: प्राप्त स्थान : -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

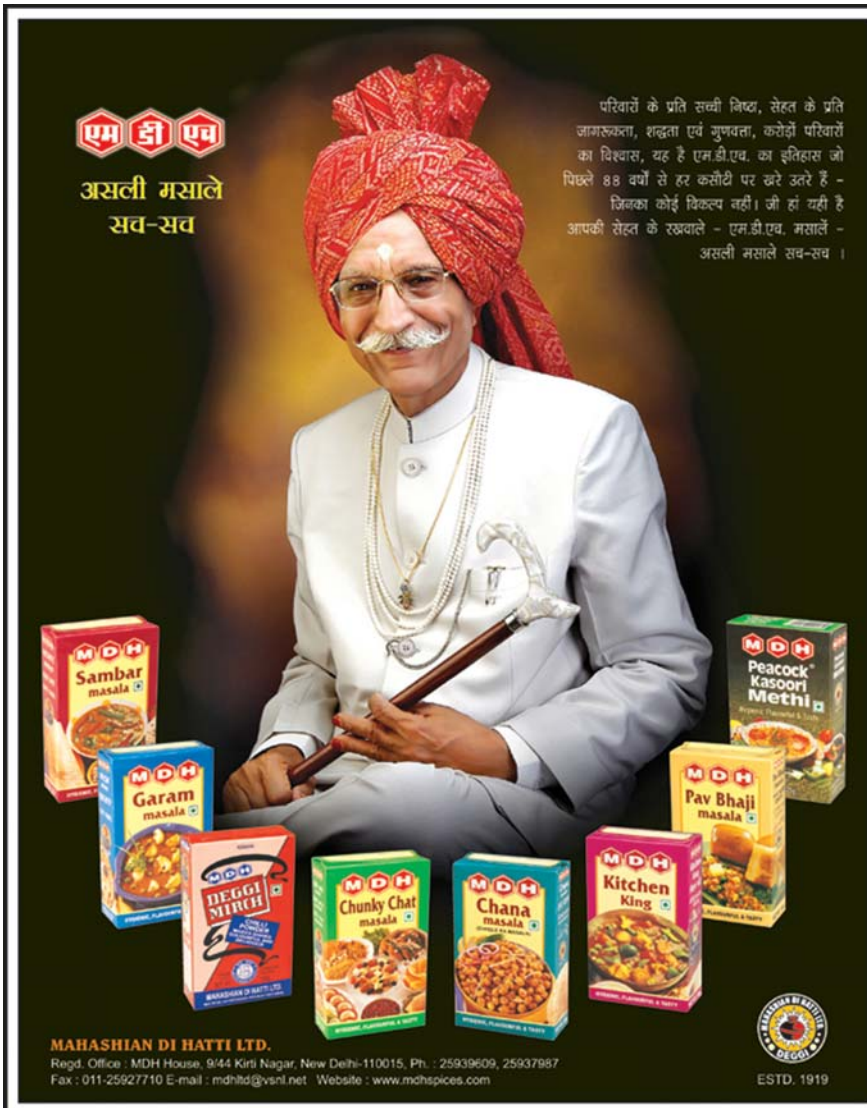

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर